International Journal of Applied Research 2020; 6(1): 175-176

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2020; 6(1): 175-176
www.allresearchjournal.com
Received: 29-11-2019
Accepted: 31-12-2019

**संजय साह**
(इतिहास विभाग) ल0ना0मि0वि0, दरभंगा, बिहार, भारत

**Correspondence**
**संजय साह**
(इतिहास विभाग) ल0ना0मि0वि0, दरभंगा, बिहार, भारत

# महात्मा गांधी के अहिंसा सिद्धांत की दार्शनिक पृष्ठभूमि

## संजय साह

**सरांश**
महात्मा गांधी जैसा व्यक्तित्व एक घटना की तरह है। उन्हें सिर्फ स्वतंत्रता सेनानी के रूप में देखना उनके व्यक्तित्व के प्रति अन्याय होगा। उनके जीवन–दर्शन को समझने के लिए सबसे पहले एक सरल और सीधे व्यक्ति के रूप में गांधी को सम्पूर्ण समझना आवश्यक है।

**मुख्य–शब्दः** महात्मा गांधी, अहिंसा सिद्धांत

**प्रस्तावना**
किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके पूर्ववर्ती तथा समकालीन परिवेश एवं परिस्थितियों द्वारा प्रभावित होता है। गाँधी जी के जीवन व व्यक्तित्व के विषय में भी यही बात चरितार्थ होती है। गाँधी जी के विषय में प्रो0 अलबर्ट आइन्सटीन के शब्द हैं–''आनेवाली पीढ़ियों को शायद ही यह विश्वास हो कि इस प्रकार का कोई मनुष्य इस पृथ्वी पर वास्तव में रहता था।''गाँधी जी ने अपने देश के लिए जान दी, इसलिए वह महान थे कहना कहना अनुचित होगा। यह तो उस समय की पुकार थी, वे राजनीति के क्षेत्र के अभूतपूर्व विजेता थे। उन्होंने मानव समाज के एक वृहद् भाग को पराधीनता की काल कोठरी से मुक्ति दिलाई। वे केवल मानव नहीं महामानव बल्कि विश्वमानव थे। मूलतः गाँधीजी अहिंसा के साधक और सत्य के शोधक और प्रेम के पालक थे। उनके अन्य सारे रूप तो इसी सत्य, प्रेम और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए अनायास ही निखरते चले गए।
ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि गाँधी जी बचपन से ही असाधारण रहे। न तो उनमें कोई विस्मयकारी प्रतिभा थी, न कोई रहस्यमय ज्योति और न ही कोई विशेष व्यक्तित्व। उनके बचपन में भावी महानता के कोई चिह्न नहीं थे। शरीर से दुबले–पतले, छवि में अत्यंत साधारण, जीवन में सादे, बुद्धि में सामान्य, स्वभाव में उज्ज्वल और इन सबसे अलग बेहद आत्मविश्वासी। प्रकृति ने उनको ऐसी शक्ति दी थी जिससे उन्होंने अपने हाथों से अपनी रुखानी लेकर अपने–आपको ही काट–छाँटकर एक ऐसा व्यक्तित्व बना दिया जिसके विद्युतीय आकर्षण में भारत ने ही नहीं सारे विश्व ने उनकी पूजा की। महात्मा गाँधी की सबसे बड़ी विशेषता यही रही कि उन्होंने अपने ऊपर ही विजय प्राप्त कर लिया था। आत्म विजय ही उन्हें महानता के उच्च शिखर पर पहुँचाने में सहायक सिद्ध हुआ। उनके दर्शन की एक ऐसी पृष्ठभूमि है, जो कि समकालीन परिवेश, भारतीय धर्म–दर्शन, भक्ति–आंदोलन, पाश्चात्य धर्म–दर्शन, सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलन तथा समकालीन भारतीय और पाश्चात्य चिंतकों द्वारा प्रभावित है। गाँधी ने अपने दर्शन को केवल कथनी में ही नहीं, अपितु करनी में भी ढाला था। अतः उक्त प्रभाव के साथ ही साथ उनकी रचनाओं को भी उद्धृत करना प्रासंगिक लगता है, जिस पृष्ठभूमि पर उन्होंने अपने दर्शन को खड़ा किया है। किसी भी दार्शनिक के दर्शन पर सम्यक्रूपेण विवेचन करने के पूर्व यह समीचीन लगता है कि उनके दार्शनिकता की प्रामाणिकता भी दी जाय। उनके जीवन–दर्शन पर समकालीन परिवेश का भी गहरा प्रभाव रहा है और इस श्रृंखला में उनके पारिवारिक परिवेश का जिक्र करना लाजिम हो जाता है।
गाँधी जी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था। उनका सम्पूर्ण परिवार वैष्णव था, अतएव वे लोग सगुण तथा साकार ईश्वर की उपासना में दृढ़ आस्था रखते थे। मंदिरों में पूजा–अर्चना, व्रत–उपवास आदि करना उनके परिवार का दैनंदिन कार्य था। इस वातावरण का मोहनदास पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। उनके मानस–पटल पर सत्य–अहिंसा तथा कर्त्तव्य–निष्ठा के भाव अपने पिता द्वारा अंकित हुए। उनकी माँ पुतलीबाई से भी उन्हें काफी प्रेरणा प्राप्त हुई, इस संदर्भ में उन्होंने कहा है कि–''जीवन में कठिनतम व्रत लेने तथा उन्हें दृढतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए वे अपनी माँ के ऋणी हैं।'' मोहनदास की माँ ने उन्हें ''अहिंसा परमो धर्मः'' तथा ''सत्यमेव जयते'' का मंत्र बताकर उनके जीवन को एक नई दिशा देने का प्रयास किया। गाँधी ने जीवन के सात्विक मूल्यों की प्राथमिकता सीख अपने माता–पिता के चरणों में ही प्राप्त की थी। इंग्लैण्ड जाते समय उन्हें उनकी माँ द्वारा निरामिष आचरण करना इसका स्पष्ट उदाहरण है। दीगर बात है कि इंग्लैण्ड में

गाँधी जी पर पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति का प्रभाव भी पड़ा, जो स्वाभाविक भी था। उन्होंने इस सभ्यता तथा संस्कृति की अच्छी बातों को ग्रहण किया, जो कि उनकी चारित्रिक उत्कृष्टता को प्रकट करता है।

समकालीन परिवेश तथा परिस्थितियों का किसी भी व्यक्ति पर केवल सकारात्मक ही नहीं, अपितु नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। यह तो व्यक्ति के ऊपर निर्भर है कि वह उसे समर्थित, अवहेलित या प्रतिरोधित करता है। बौद्धिक क्षमता का विकास हो जाने पर व्यक्ति एक नया दृष्टिकोण भी अपना सकता है। परिपक्व हो जाने पर गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका तथा भारत के कार्य–कलाप इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। दक्षिण अफ्रीका में गांधी ''दादा अब्दुल्ला एण्ड कम्पनी'' के अधिवक्तन के लिए गए, जहाँ पर अधिवक्ता का कार्य दलीलपूर्ण था। वहाँ पर उन्होंने इस पद्धति को स्वीकार नहीं किया तथा दोनों पक्षों के बीच समझौता करा दिया। उनका यह कार्य उन्हें एक ईमानदार अधिवक्ता के रूप में प्रतिष्ठित करता है। दक्षिण अफ्रीका में रंग–भेद अपनी चरम सीमा पर था। वहाँ पर यूरोपीय शिक्षा–दीक्षा, वेश–भूषा तथा मान–मर्यादा के बावजूद गांधी को अपमानित होना पड़ता था, जिसने उनके मन में विद्रोह की भावना पैदा कर दी। परिणामतः उन्होंने वहाँ अन्याय का डटकर विरोध किया, किंतु रंग–भेद से मदान्ध शासकों पर उनके इस कार्य का कोई प्रभाव नहीं पड़ा इसके विपरीत वे उन्हें और अधिक परेशान करने लगे। वहाँ की ब्रिटिश सरकार ने गांधी को कष्ट देना और अपमानित करना प्रारंभ कर दिया तथा भारतीयों के लिए भेद–मूलक कानून भी बनाए जाने लगे। भारतीयों के अधिकारों का हनन होते देख गांधी जी ने निष्क्रिय प्रतिरोध तथा अनैतिक कानूनों की सविनय अवज्ञा आरंभ कर दी। इसके साथ ही साथ उन्होंने अपने भीतर ऐसी भावना का विकास कर लिया जिससे वहाँ की सरकार तथा जनता द्वारा दी गई यातनाओं के विरुद्ध उनमें घृणा या आक्रोश का भाव पैदा न हो। गांधी के संघर्ष की यह अहिंसक पद्धति अंततः सफल रही। इस सफलता के पीछे उनकी व्यक्तिगत दीर्घकालीन साधना, त्यागमय जीवन तथा सत्य एवं न्याय के प्रति उनकी दृढ़ आस्था से समुत्पन्न आत्मविश्वास था, जिससे उनके कार्यकर्ताओं को स्वतः प्रेरणा भी मिलती थी।

भारत आगमन पर यहाँ के परिवेश तथा परिस्थितियों से गांधी जी अत्यंत प्रभावित हुए। दक्षिण अफ्रीका की तरह यहाँ भी ब्रिटिश सरकार भारतीयों के साथ अमानवीय आचरण कर रही थी। जो भारतीय स्वतंत्रता की मांग एवं ब्रिटिश सरकार का विरोध करते थे। फलतः गांधी ने अपने सत्याग्रह नामक अस्त्र का प्रयोग भारत में करना आवश्यक समझा। उन्होंने गुजरात के साबरमती नामक स्थान पर कृषि–कार्य तथा कार्यकर्ता प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया। इस केंद्र को उन्होंने 'सत्याग्रह आश्रम' का नाम दिया। गांधीजी ने सच्चाई तथा प्रेम के बल पर लोगों को संगठित कर उनको अहिंसक सैनिक बनाकर पूंजीपतियों तथा ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अपने न्यायोचित संघर्ष में संलग्न किया तथा अंततः उन्हें विजयी बनाया। अपने संघर्ष के अहिंसात्मक तरीकों की क्रमशः सफलता के कारण उन्होंने करोड़ों लोगो के हृदय में सर्वोच्च नेता का स्थान बना लिया।

## भारतीय धर्म–दर्शन का प्रभाव

गांधी जी पर भारतीय धर्म–दर्शन का प्रभाव सर्वाधिक पड़ा। इस क्रम में उनपर वेद तथा उपनिषद् का प्रभाव परिलक्षित होता है। उनके अनुसार वेदकालीन सभ्यता में हिन्दू वर्ग जाति–प्रथा तथा अस्पृश्यता की भावना से ग्रसित नहीं था, इसलिए वे उसे अनुकरणीय मानते थे। गांधी इशावास्योपनिषद् से सर्वाधिक प्रभावित थे, जिसमें इस बात की विवेचना की गई है कि इस संसार में जो कुछ भी है उसमें ईश्वर व्याप्त हैं। इसलिए ईश्वर के नाम से त्याग करके तुम यथा प्राप्त वस्तुओं का उपभोग करो। उनके अनुसार जैन, बौद्ध तथा सभी हिन्दू दर्शन, वेद तथा उपनिषद् के ऋणी हैं। उन्होंने अपनी दैनिक प्रार्थना में उपनिषद् के मंत्रों का स्मरण किया, जो कि उपनिषद् के प्रति उनकी महती आस्था को दर्शाता है।

गांधी–दर्शन की पृष्ठभूमि मुख्यतः गीता पर ही आधारित है। उनपर श्रीमद्भगवद गीता का इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने गीता को ''माता'' की संज्ञा प्रदान कर दी। गांधी का उद्देश्य अपने व्यक्तिगत जीवन में भी श्रीमद्भगवत गीता में वर्णित स्थिति–प्रज्ञ की अवस्था प्राप्त करना तथा सम्पूर्ण मानवता में उसे कार्यान्वित करने का था। गांधी जी के वक्तव्यों से ऐसा लगता है कि श्रीमद्भगवद गीता उनके जीवन की संरक्षिका थी। उन्होंने कहा था–''जब मुझे संशय परेशान करता है एवं मुझे क्षितिज पर प्रकाश की एक भी किरण दिखाई नहीं देती, तब में भगवदगीता की ओर उन्मुख होता हूँ, मुझे कोई न कोई श्लोक संतोष के लिए मिल जाता है।''

इसी तरह गांधी पर महाभारत और पुराण का भी प्रभाव था। उन्होंने महाभारत को प्रतिदिन मनुष्य के हृदय में चलने वाले आसुरी वृत्ति तथा दैवी वृत्ति के बीच चलने वाला द्वंद्व युद्ध माना था। पुराणों को गांधी ने अपने युग की कृतियों तथा स्मृतियों के विकास के रूप में देखा था। पुराणों में विशेषतः भागवत पुराण में उन्होंने भक्ति तत्व को अधिक समझने की कोशिश की है। गांधी ने पुराणों में वर्णित सत्य को आंशिक रूप में ही ग्रहण किया।

गांधी पर योग–दर्शन का भी प्रभाव पड़ा है। उन्होंने सांख्य के प्रकृति तथा उसके परिणामवाद के सिद्धांत को स्वीकार किया है। सांख्य के ज्ञान–मार्ग के सिद्धांत को उन्होंने मोक्ष दिलानेवाला कहा है। परंतु इस सिद्धांत को उन्होंने अपने जीवन–चरित में चरितार्थ नहीं किया।

इस प्रकार गांधी की दार्शनिकता प्रमाणित हो जाने पर यह समीचीन लगता है कि उनके दर्शन पर विवेचन किया जाय। गांधी दर्शन का मौलिक बिंदु अहिंसा का राजनैतिक प्रयोग है, जिसपर उनका सम्पूर्ण दर्शन आधारित है।

## संदर्भ–ग्रंथ


1. गांधी विचार रत्न, एम0 के0 गांधी, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1967
2. गांधी विचार दोहन, एम0 के0 गांधी, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1939
3. गांधी वाणी, एम0 के0 गांधी, संपादक, रामनाथ सुमन, साधना सदन प्र0, इलाहाबाद, 1947
4. बापू के पत्र, एम0 के0 गांधी, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1958
5. मेरे सपनों का भारत, एम0 के0 गांधी, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1960
6. गांधी मीमांसा, पण्डित रामदयाल तिवारी, इण्डियन प्रेस, प्रयाग, 1991